7

मैक्स वेबर : प्रोटेस्टैण्ट आचार और पूंजीवाद का सार

(MAX WEBER : PROTESTANT ETHICS AND THE SPIRIT OF CAPITALISM)

मैक्स वेबर की सर्वाधिक महत्वपूर्ण देन **'धर्म का समाजशास्त्र'** है। उन्होंने विश्व के अनेक महान् धर्मों का अध्ययन किया। उनका यह अध्ययन तीन बड़े ग्रन्थों के रूप में है। उन्होंने अपने अध्ययन में धर्म तथा आर्थिक व सामाजिक घटनाओं के बीच सम्बन्ध दर्शाने का प्रयत्न किया है। **पारसन्स** ने लिखा है, "इसमें कोई सन्देह नहीं कि वेबर समस्त सम्बन्धित क्षेत्रों में असाधारण रूप से एक योग्य सामाजिक तथा आर्थिक इतिहासकार थे और इस कारण आप सुगमता से अपने शेष शैक्षणिक जीवन को एक महान् ऐतिहासिक अध्ययन हेतु लगा सकते थे, परन्तु ऐसा करने के स्थान पर आप पूर्णतः भिन्न अध्ययन क्षेत्र की ओर मुड़े तथा सभी महान् विश्वधर्मों के धार्मिक आचारों (Religious Ethics) एवं उनसे सम्बन्धित सामाजिक एवं आर्थिक संगठन के बीच पाये जाने वाले विद्यमान सम्बन्धों के शुद्ध तुलनात्मक अध्ययन कार्य में आपने अपने लगा दिया।" इस तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से आपने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि सामाजिक संरचना में समग्र रूप में ऐसे कौन-से तत्व हैं जो केन्द्रीय महत्व के हैं।

वेबर ने अपना समाजशास्त्रीय जीवन यद्यपि अर्थशास्त्र के बारे में विचार व्यक्त करने में किया और आपने कानून, नैतिकता एवं सामाजिक इतिहास के बारे में भी महत्वपूर्ण देन दी लेकिन धर्म के समाजशास्त्र के बारे में वेबर के विचारों को सर्वाधिक रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है। वेबर ने विश्व के प्रमुख धर्मों का विशद् अध्ययन किया और वह जानने का प्रयत्न किया कि धर्म व आर्थिक-सामाजिक घटनाओं में क्या सम्बन्ध है। अपने अध्ययन को उन्होंने तीन बड़े ग्रन्थों में प्रकाशित किया। **उन्होंने अपने अध्ययन के आधार पर यह दर्शाने का प्रयत्न किया कि आधुनिक पूंजीवाद केवल पश्चिमी देशों में ही सबसे पहले क्यों आया, अन्य देशों में क्यों नहीं?** इसके लिए उसने विभिन्न धर्मों में पाये जाने वाले धार्मिक आधारों (Religious Etihcs) का तुलनात्मक अध्ययन किया और उनका आर्थिक व सामाजिक संगठनों से सम्बन्धों का विश्लेषण किया। धर्म एवं आर्थिक जीवन के सम्बन्धों के अध्ययन को आपने **'दि प्रोटेस्टैण्ट एथिक एण्ड दि स्प्रिट ऑफ कैपीटलिज्म'** नामक पुस्तक में प्रकाशित किया है। मार्क्स की ही भांति वेबर भी यह मानते हैं कि सामाजिक संरचना एवं सामाजिक जीवन में आर्थिक कारक ही महत्वपूर्ण हैं, किन्तु मार्क्स की भांति वे आर्थिक कारकों को मानव के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक, कलात्मक और दार्शनिक जीवन को निर्धारित करने वाला एकमात्र कारक नहीं मानते।

वेबर का बौद्धिक दृष्टिकोण (Intellectual View-Point of Weber)

वेबर के धर्म सम्बन्धी विचारों का उल्लेख उनकी प्रसिद्ध कृति 'दि प्रोटेस्टैण्ट इथिक एण्ड दि स्प्रिट ऑफ कैपीटलिज्म' में पाया जाता है। इस कृति में उन्होंने यह प्रश्न उठाया है कि पश्चिमी समाजों में प्रचलित इस विचार का मूल क्या है कि—**"मनुष्य का कर्तव्य ईश्वर द्वारा प्रदत्त अपनी आजीविका कमाने में है।"** इस समस्या का सम्बन्ध विभिन्न सभ्यताओं में धर्म और समाज से है। धर्म सम्बन्धी अपने अन्वेषण के आधार पर वेबर ने यह बताया कि किस प्रकार कुछ धार्मिक सिद्धान्तों के प्रभाव से आर्थिक जीवन की औचित्य निर्धारण की क्षमता बढ़ी और कुछ के प्रभाव से घटी।

वेबर ने धर्म की समाजशास्त्रीय विवेचना में निम्नांकित तीन प्रमुख समस्याओं को लेकर अध्ययन आरम्भ किया, वे हैं :

(1) एक औसत अनुयायी की धर्म निरपेक्ष नीति और आर्थिक व्यवहार पर प्रमुख धार्मिक विचारों का प्रभाव।

(2) समूह की रचना पर धार्मिक विचारों का प्रभाव।

(3) विभिन्न सभ्यताओं में धार्मिक सभ्यता के कारणों और प्रभाव की तुलना के बाद पश्चिमी सभ्यता के तत्वों का निर्णय करना।

इन समस्याओं के स्पष्टीकरण को जानने के लिए वेबर ने पश्चिमी पूंजीवाद के विकास का अध्ययन किया। उन्होंने यह जानने का प्रयत्न किया कि पूंजीपति लोगों में धार्मिक रुझान का प्रारूप क्या है? वेबर ने अपने अध्ययन में यह पाया कि सभी समाजों में बड़े व्यापारियों के मस्तिष्क में यह एक नैतिक कल्पना होती है कि देवता व्यक्ति से अच्छे कार्य की अपेक्षा करते हैं तथा उसे समुचित पुरस्कार भी देते हैं तथा बुरे कार्यों के लिए व्यक्ति को दण्ड दिया जाता है। वेबर के अनुसार मनुष्य धार्मिक विश्वासों के अनुसार इसलिए कार्य करता है। जिससे उसकी उन्नति हो तथा वह दीर्घायु हो। वेबर ने अपने इस अध्ययन में धार्मिक कारकों को परिवर्तनीय तत्व माना है और उसका आर्थिक तथा सामाजिक घटनाओं पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका कार्य-कारण के आधार पर विश्लेषण किया है। वेबर का विश्वास है कि केवल कुछ अर्थों में समान और अन्य अर्थों में भिन्न उदाहरणों का अध्ययन करके ही किसी कारक के कार्य-कारण प्रभाव का निर्णय, किया जा सकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए वेबर ने विश्व के छः महान् धर्मों का अध्ययन किया।

वेबर ने अपनी गहरी पद्धतिशास्त्रीय अन्तर्दृष्टि के द्वारा प्रोटेस्टैण्ट धर्म के उन आचारों को ढूंढा जिन्होंने आधुनिक पूंजीवाद की आत्मा को विकसित किया। उन्होंने धर्म को एक परिवर्तनीय तत्व माना और यह दर्शाया कि धर्म किस प्रकार मानव के सामाजिक और आर्थिक जीवन को प्रभावित करता है। अपने अध्ययन के आधार पर वेबर ने धर्म के समाजशास्त्र के बारे में निम्नांकित निष्कर्ष दिये :

(1) धार्मिक एवं आर्थिक घटनाएं परस्पर एक-दूसरे से सम्बन्धित और एक-दूसरे पर निर्भर हैं। इनमें से किसी एक को दूसरे का निर्णायक मानना उचित नहीं है। वास्तव में ये दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करती रहती हैं।

(2) हमें घटनाओं के विश्लेषण में एकतरफा दृष्टिकोण नहीं अपना लेना चाहिए, केवल आर्थिक या धार्मिक आधार पर ही किसी घटना की विवेचना नहीं करनी चाहिए वरन् अन्य कारकों के प्रभाव को भी ध्यान में रखना चाहिए।

(3) परन्तु अध्ययन पद्धति के आधार के रूप में इनमें से किसी एक कारक को एक परिवर्तनीय तत्व माना जा सकता है। वेबर धार्मिक कारक को एक परिवर्तनीय तत्व मानकर उसका आर्थिक तथा अन्य सामाजिक घटनाओं पर प्रभाव मालूम करने का प्रयत्न करते हैं।

(4) वेबर ने सभी धर्मों के सभी तत्वों का उल्लेख न कर उनके केवल आदर्श-प्ररूपों (Ideal type) का ही उल्लेख किया है। इसी प्रकार से आर्थिक कारकों के भी आदर्श-प्ररूपों को ज्ञात किया। स्पष्ट है कि वेबर ने अपने धर्म के अध्ययन में आदर्श-प्ररूप की अवधारणा का प्रयोग किया है।

वेबर ने धार्मिक और आर्थिक कारकों के सम्बन्धों को जानने के लिए विश्व के छः प्रमुख धर्मों (हिन्दू, बौद्ध, ईसाई, कन्फ्यूशियस, इस्लाम तथा यहूदी धर्म) का अध्ययन किया और प्रत्येक धर्म में पाये जाने वाले उन आर्थिक विचारों की जानकारी ली जो उस धर्म से सम्बन्धित लोगों के आर्थिक व सामाजिक जीवन को प्रभावित करते हैं। अपने अध्ययन के आधार पर वेबर ने यह प्रकट किया कि केवल प्रोटेस्टैण्ट धर्म में ही कुछ ऐसे आर्थिक आचार पाये जाते हैं जिन्होंने आधुनिक पूंजीवाद को जन्म दिया, यद्यपि इसके लिए अन्य कारक भी उत्तरदायी रहे हैं। वेबर कहते हैं कि यूरोप में जब रोमन कैथोलिक धर्म प्रचलित था तो पूंजीवाद नहीं पनपा, किन्तु धार्मिक सुधार आन्दोलन के कारण जब प्रोटेस्टैण्ट धर्म का उदय हुआ तो आधुनिक पूंजीवाद का भी उदय हुआ।

वेबर ने धर्म की समाजशास्त्रीय विवेचना में निम्नांकित तीन प्रमुख समस्याओं को लेकर अध्ययन आरम्भ किया, वे हैं :

(1) एक औसत अनुयायी की धर्म निरपेक्ष नीति और आर्थिक व्यवहार पर प्रमुख धार्मिक विचारों का प्रभाव।

(2) समूह की रचना पर धार्मिक विचारों का प्रभाव।

(3) विभिन्न सभ्यताओं में धार्मिक सभ्यता के कारणों और प्रभाव की तुलना के बाद पश्चिमी सभ्यता के तत्वों का निर्णय करना।

इन समस्याओं के स्पष्टीकरण को जानने के लिए वेबर ने पश्चिमी पूंजीवाद के विकास का अध्ययन किया। उन्होंने यह जानने का प्रयत्न किया कि पूंजीपति लोगों में धार्मिक रुझान का प्रारूप क्या है? वेबर ने अपने अध्ययन में यह पाया कि सभी समाजों में बड़े व्यापारियों के मस्तिष्क में यह एक नैतिक कल्पना होती है कि देवता व्यक्ति से अच्छे कार्य की अपेक्षा करते हैं तथा उसे समुचित पुरस्कार भी देते हैं तथा बुरे कार्यों के लिए व्यक्ति को दण्ड दिया जाता है। वेबर के अनुसार मनुष्य धार्मिक विश्वासों के अनुसार इसलिए कार्य करता है। जिससे उसकी उन्नति हो तथा वह दीर्घायु हो। वेबर ने अपने इस अध्ययन में धार्मिक कारकों को परिवर्तनीय तत्व माना है और उसका आर्थिक तथा सामाजिक घटनाओं पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका कार्य-कारण के आधार पर विश्लेषण किया है। वेबर का विश्वास है कि केवल कुछ अर्थों में समान और अन्य अर्थों में भिन्न उदाहरणों का अध्ययन करके ही किसी कारक के कार्य-कारण प्रभाव का निर्णय, किया जा सकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए वेबर ने विश्व के छः महान् धर्मों का अध्ययन किया।

वेबर ने अपनी गहरी पद्धतिशास्त्रीय अन्तर्दृष्टि के द्वारा प्रोटेस्टैण्ट धर्म के उन आचारों को ढूंढा जिन्होंने आधुनिक पूंजीवाद की आत्मा को विकसित किया। उन्होंने धर्म को एक परिवर्तनीय तत्व माना और यह दर्शाया कि धर्म किस प्रकार मानव के सामाजिक और आर्थिक जीवन को प्रभावित करता है। अपने अध्ययन के आधार पर वेबर ने धर्म के समाजशास्त्र के बारे में निम्नांकित निष्कर्ष दिये :

(1) धार्मिक एवं आर्थिक घटनाएं परस्पर एक-दूसरे से सम्बन्धित और एक-दूसरे पर निर्भर हैं। इनमें से किसी एक को दूसरे का निर्णायक मानना उचित नहीं है। वास्तव में ये दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करती रहती हैं।

(2) हमें घटनाओं के विश्लेषण में एकतरफा दृष्टिकोण नहीं अपना लेना चाहिए, केवल आर्थिक या धार्मिक आधार पर ही किसी घटना की विवेचना नहीं करनी चाहिए वरन् अन्य कारकों के प्रभाव को भी ध्यान में रखना चाहिए।

(3) परन्तु अध्ययन पद्धति के आधार के रूप में इनमें से किसी एक कारक को एक परिवर्तनीय तत्व माना जा सकता है। वेबर धार्मिक कारक को एक परिवर्तनीय तत्व मानकर उसका आर्थिक तथा अन्य सामाजिक घटनाओं पर प्रभाव मालूम करने का प्रयत्न करते हैं।

(4) वेबर ने सभी धर्मों के सभी तत्वों का उल्लेख न कर उनके केवल आदर्श-प्ररूपों (Ideal type) का ही उल्लेख किया है। इसी प्रकार से आर्थिक कारकों के भी आदर्श-प्ररूपों को ज्ञात किया। स्पष्ट है कि वेबर ने अपने धर्म के अध्ययन में आदर्श-प्ररूप की अवधारणा का प्रयोग किया है।

वेबर ने धार्मिक और आर्थिक कारकों के सम्बन्धों को जानने के लिए विश्व के छः प्रमुख धर्मों (हिन्दू, बौद्ध, ईसाई, कन्फ्यूशियस, इस्लाम तथा यहूदी धर्म) का अध्ययन किया और प्रत्येक धर्म में पाये जाने वाले उन आर्थिक विचारों की जानकारी ली जो उस धर्म से सम्बन्धित लोगों के आर्थिक व सामाजिक जीवन को प्रभावित करते हैं। अपने अध्ययन के आधार पर वेबर ने यह प्रकट किया कि केवल प्रोटेस्टैण्ट धर्म में ही कुछ ऐसे आर्थिक आचार पाये जाते हैं जिन्होंने आधुनिक पूंजीवाद को जन्म दिया, यद्यपि इसके लिए अन्य कारक भी उत्तरदायी रहे हैं। वेबर कहते हैं कि यूरोप में जब रोमन कैथोलिक धर्म प्रचलित था तो पूंजीवाद नहीं पनपा, किन्तु धार्मिक सुधार आन्दोलन के कारण जब प्रोटेस्टैण्ट धर्म का उदय हुआ तो आधुनिक पूंजीवाद का भी उदय हुआ।

वेबर ने अपनी पुस्तक "**दि प्रोटेस्टैण्ट इथिक एण्ड दि स्प्रिट ऑफ कैपीटलिज्म**" में धर्म सम्बन्धी, विचारों की विवेचना में 'पूंजीवाद' तथा 'प्रोटेस्टैण्ट नीति' को विशेष महत्व दिया है, इसलिए इन दोनों की यहां संक्षेप में चर्चा करना आवश्यक है।

पूंजीवाद का सार (Essence of Capitalism)

मानव के आर्थिक आचरणों पर धार्मिक प्रभावों को स्पष्ट करने के लिए वेबर ने 1904 और 1905 में जो लेख लिखे, उन्हीं के आधार पर उनकी सबसे प्रसिद्ध तथा विवादग्रस्त पुस्तक "दि प्रोटेस्टैण्ट इथिक एण्ड दि स्प्रिट ऑफ कैपीटलिज्म" प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में वेबर ने इस समस्या पर प्रकाश डाला है कि किस प्रकार प्रोटेस्टैण्ट धर्म की नीतियां पूंजीवाद के विकास को प्रभावित करती हैं।

वेबर को अपने पारिवारिक जीवन में ही व्यक्तिवाद तथा आर्थिक आचरणों से सम्बद्ध नैतिकता का एक अनूठा सम्मिश्रण देखने को मिला। वेबर के चाचा कार्ल डेविड वेबर एक ऐसे उद्यम के संस्थापक थे जो गांव के घरेलू उद्योग पर आधारित था। वेबर ने देखा कि उनके रहन-सहन के तरीके में कठिन परिश्रम, दिखावे का अभाव, दयालुता और तर्कनापरकता के गुण थे जो आधुनिक पूंजीवाद के प्रारम्भिक भाग के बड़े उद्यमकर्ताओं में झलकते थे। इस बात से वेबर को यह विश्वास हो गया कि पूंजीवाद एक विशेष प्रकार की नैतिकता है जिसमें अनेक विचारों का समावेश देखा जा सकता है।

वेबर के अनुसार आधुनिक औद्योगिक जगत् के मनुष्य की एक विशेषता यह है कि उसे कठोर परिश्रम करना चाहिए। उन्हीं के शब्दों में कठोर कार्य एक कर्तव्य है और इसका फल इसी में निहित है। मनुष्य अपने व्यवसाय में अच्छी तरह काम करे, इस भावना से नहीं कि उसे यह काम करना पड़ रहा है वरन् इसलिए कि वह भी ऐसा चाहता है। यही मनुष्य के शील और वैयक्तिक सन्तुष्टि का आधार है। अमरीका में एक कहावत प्रसिद्ध है—"यदि कोई काम करने के योग्य है तो उसे सबसे अच्छे ढंग से पूरा करना चाहिए।" वेबर के अनुसार यह कहावत पूंजीवाद का सार है क्योंकि इस धारणा का सम्बन्ध व्यक्ति को आर्थिक जीवन में मिलने वाली सफलता से है।

पूंजीवाद के सार को स्पष्ट करने के लिए वेबर ने इसकी तुलना एक अन्य आर्थिक क्रिया से की है जिसका नाम उसने '**परम्परावाद**' रखा। आर्थिक क्रियाओं में परम्परावाद वह स्थिति है उसमें व्यक्ति काम कम और प्रतिफल अधिक चाहता है, काम के दौरान आराम अधिक पसन्द करता है कार्य की नई प्रविधियों से अनुकूलन करने की इच्छा नहीं करता, कम आय से सन्तुष्ट हो जाता है, अकस्मात् लाभ प्राप्त करने का प्रयत्न करता है तथा सिद्धान्तहीन रूप से धन का संचय करता है। ये सभी विशेषताएं पूंजीवाद के सार के विपरीत हैं। आधुनिक पूंजीवाद अन्तर्सम्बन्धित संस्थाओं का एक ऐसा संकुल है जिसका आधार तर्कनापरक आर्थिक प्रयत्न है न कि सटोरियों की तरह के प्रयत्न। पूंजीवाद के अन्तर्गत व्यापारिक नियमों का कानूनी रूप, संगठित विनिमय केन्द्र, सरकारी ऋण पत्रों के रूप में सार्वजनिक ऋण देने की प्रणाली तथा ऐसे उद्यमों के संगठनों का समावेश है जिसका उद्देश्य वस्तुओं का तार्किक आधार पर उत्पादन करना होता है, न कि उनका व्यापार करना। वेबर ने दक्षिणी यूरोप, एशिया के विशेषाधिकार सम्पन्न समूहों, चीन के अधिकारियों, रोम के अभिजात वर्ग तथा एल्बी नदी के पूर्व के जमींदारों की आर्थिक क्रियाओं को अकस्मात् लाभ की क्रियाएं माना है क्योंकि उनमें नैतिक विचारों तथा आर्थिक लाभ के तर्कनापरक प्रयत्नों का अभाव था, इसलिए उन्हें पूंजीवाद के समकक्ष नहीं रखा जा सकता।

वेबर का मत है कि पूंजीवाद के सार का गुण केवल पश्चिमी समाजों का ही एकमात्र गुण नहीं है, अन्य समाजों में भी ऐसे लोग हुए हैं जिन्होंने अपने व्यापार को सुचारु रूप से चलाने के लिए कठोर परिश्रम किया, जो अपनी बचत को व्यापार को बढ़ाने में लगाते थे और जिनका जीवन आडम्बररहित था। फिर भी जिन पूंजीवादी विशेषताओं का उल्लेख ऊपर किया गया है, वे पश्चिमी समाजों में ही अधिक पायी जाती है। पश्चिमी समाजों में यह एक व्यक्तिगत गुण न होकर जीवन-यापन का एक सामान्य तरीका हो गया। इस प्रकार जनसामान्य में व्याप्त कठोर परिश्रम, व्यापारिक आचार, सार्वजनिक ऋण-व्यवस्था, पूंजी का निरन्तर विनियोजन तथा परिश्रम के प्रति स्वैच्छिक प्रवृत्ति पूंजीवाद का सार है, इसके विपरीत अकस्मात् आर्थिक लाभ पाने का प्रयत्न परिश्रम को बोझ और अभिशाप समझकर उससे दूर भागना, सिद्धान्तहीन रूप से पूंजी का

संचय करना तथा जीवनयापन के लिए साधारण आय से सन्तुष्ट हो जाना, सामान्य आर्थिक परिस्थितियां अथवा 'परम्परावाद' है।

✔प्रोटेस्टैण्ट नीति (आचार) (Protestant Ethics)

पूंजीवाद के सार को स्पष्ट करने के बाद वेबर ने ऐसे कारणों को प्रस्तुत किया जिनके आधार पर इनकी उत्पत्ति को धार्मिक सुधार आन्दोलनों के विचारों में खोजा जा सके। वेबर से पूर्व पेटी (Petty), माण्टेस्क्यू (Montesquieu), बकल (Buckle), कीट्स (Keats), आदि ने प्रोटेस्टैण्ट धर्म तथा व्यापारिक प्रवृत्ति के विकास के सहसम्बन्धों पर अपने विचार प्रकट किये थे। वेबर ने अपने एक विद्यार्थी **बाडेन** (Baden) को राज्य में धार्मिक सम्बन्धों और शिक्षा के चुनाव का अध्ययन करने के लिए कहा। **बाडेन** के अध्ययन का निष्कर्ष यह था कि कैथोलिक विद्यार्थियों की तुलना में प्रोटेस्टैण्ट विद्यार्थी उन शिक्षण संस्थाओं में अधिक प्रवेश लेते थे जो औद्योगिक जीवन से सम्बद्ध थीं। इसका एक अन्य कारण यह भी था कि यूरोप में कुछ अल्पसंख्यक समूहों ने तो कठोर आर्थिक परिश्रम करके अपनी सामाजिक और राजनीतिक हानियों को पूरा कर लिया था जबकि कैथोलिक धर्म के अनुयायी ऐसा नहीं कर सके। इन कारणों से वेबर ने यह निष्कर्ष दिया कि धार्मिक नीति और आर्थिक क्रियाओं के बीच एक सहसम्बन्ध पाया जाता है। वेबर ने यह भी देखा कि जिन प्रदेशों और नगरों ने प्रोटेस्टैण्ट धर्म स्वीकार कर लिया था, वे आर्थिक लाभ के प्रयत्न को बढ़ावा दे रहे थे। वेबर ने यह भी गवेषणा की कि प्रोटस्टैण्ट धर्म की नीतियां किस प्रकार उन लोगों के लिए प्रेरणा-स्रोत बन गयी थीं जो तार्किक दृष्टि से आर्थिक लाभों को प्राप्त करने के पक्ष में थे। प्रोटेस्टैण्टवाद वह धार्मिक विचारधारा है जो पोप के सर्वस्व अधिकार को स्वीकार नहीं करता और जिसमें विवेक का तत्व विशेष रूप से पाया जाता है। नैतिकतावादी दृष्टिकोण संग्रह की प्रवृत्ति, ईमानदारी, श्रम के प्रति निष्ठा, ये सभी प्रोटेस्टैण्ट धर्म के प्रमुख तत्व हैं जिनके कारण यूरोप के विभिन्न देशों में पूंजीवाद का विशेष विकास हुआ।

प्रोटेस्टैण्ट धर्म की नीति रूप में **सेण्ट पॉल** के इस आदेश को व्यापक रूप से ग्रहण किया गया—"जो व्यक्ति काम नहीं करेगा, वह रोटी नहीं खायेगा....तथा निर्धन की तरह धनवान भी ईश्वर के गौरव को बढ़ाने के लिए किसी-न-किसी व्यवसाय में अवश्य जुटे।" इस कथन में प्रोटेस्टैण्ट धर्मावलम्बियों को परिश्रम की प्रेरणा दी गयी है। ऐसे ही कुछ अन्य वाक्य और भी हैं जैसे **रिचार्ड बैकस्टर** (Richard Baxter) ने कहा था, "केवल कर्म के लिए ही ईश्वर हमारी और हमारी क्रियाओं की रक्षा करता है, परिश्रम ही व्यक्ति का नैतिक तथा प्राकृतिक उद्देश्य है .....केवल परिश्रम से ही ईश्वर की सबसे अधिक सेवा तथा सम्मान हो सकता है।" **सेण्ट जॉन बनियन** ने भी कहा था, "यह नहीं कहा जायेगा कि तुम क्या विश्वास करते थे केवल यह कहा जायेगा कि क्या तुम परिश्रम भी करते थे, या केवल बातूनी ही थे।" इस प्रकार प्रोटेस्टैण्ट धर्म में सक्रिय जीवन, परिश्रम, समय का सदुपयोग, व्यर्थ की बातचीत करना, अधिक न सोना तथा ईश्वर के ध्यान के स्थान पर कार्य करना आदि को व्यक्ति के जीवन की नियमावली के अन्तर्गत रखा गया है जिन्हें प्रोटेस्टैण्ट नीति कह सकते हैं।

वेबर ने प्रोटेस्टैण्ट धर्म में पाये जाने वाले उन आर्थिक आचारों का भी उल्लेख किया है जिन्होंने आधुनिक पूंजीवाद को जन्म दिया। **बेन्जामिन फ्रैंकलिन** ने आधुनिक पूंजीवाद की उन शिक्षाओं एवं उपदेशों का उल्लेख किया है जो सफल व्यवसायी एवं पूंजीपति बनने के लिए आवश्यक हैं। वे हैं—"समय ही धन है", "धन से धन कमाया जाता है", "एक पैसा बचाना एक पैसा कमाना है", "ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है", "जल्दी सोना और जल्दी उठना व्यक्ति को स्वस्थ, धनी और बुद्धिमान बनाता है", "कार्य ही पूजा है", आदि। वेबर ने प्रोटेस्टैण्ट धर्म के आचारों की तुलना दुनिया के दूसरे धर्मों से की और वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि केवल प्रोटेस्टैण्ट धर्म ही ऐसा है जिसके, आर्थिक परिणाम अधिक स्पष्ट एवं दूरगामी हैं। यह धर्म लोगों को ईमानदार एवं उत्साही होने, परिश्रम करने, मितव्ययता बरतने एवं पैसा बचाने पर जोर देता है जो कि पूंजीवाद के विकास के लिए आवश्यक है। यदि ये सिद्धान्त एवं उपदेश न होते तो आधुनिक पूंजीवाद भी सम्भव नहीं होता। हम यहां प्रोटेस्टैण्ट धर्म के उन आचारों को स्पष्ट करेंगे जिन्होंने यूरोप में आर्थिक जीवन को प्रभावित किया :

(1) **कार्य ही पूजा** (Work is Worship)—प्रोटेस्टैण्ट धर्म में कार्य करने को अच्छा माना गया है, इसके विपरीत कैथोलिक धर्म में परिश्रम करके कमाना पाप एवं दण्ड है। इस सन्दर्भ में कैथोलिक धर्म में गाथा

प्रचलित है। आदम और ईव जब स्वर्ग में थे तो ईश्वर ने उन्हें एक पेड़ के फल को खाने के लिए मना कर रखा था। इस पेड़ का फल खाने से आदमी को अच्छे और बुरे का ज्ञान हो जाता है। एक दिन दोनों ने उस पेड़ का फल खा लिया तो ईश्वर ने रुष्ट होकर उन्हें स्वर्ग से बहिष्कृत कर पृथ्वी पर भेज दिया और श्राप दिया कि ईव और उसकी पुत्रियों के कष्ट से सन्तानें होंगी तथा आदम और उसके पुत्र परिश्रम कर पसीना बहाकर, रोटी-रोजी कमायेंगे। इस बात से स्पष्ट है कि कैथोलिक धर्म में परिश्रम कर जीवनयापन करना अच्छी बात नहीं वरन् दण्ड है। जबकि प्रोटेस्टैण्ट धर्म कर्म को पूजा मानता है और परिश्रम से ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है। इस प्रकार प्रोटेस्टैण्ट धर्म परिश्रम पर बल देता है जिसने पूंजीवाद के विकास में योग दिया है।

(2) **कैलविनवाद या व्यावसायिक आचार** (Calvinism)—प्रोटेस्टैण्ट धर्म यह मानता है कि व्यक्ति के जीवन में प्राप्त व्यावसायिक सफलता और असफलता के आधार पर ही यह कहा जा सकता है कि मरने के बाद उसकी आत्मा स्वर्ग में जायेगी या नरक में, अतः प्रत्येक व्यक्ति को यह नैतिक शिक्षा दी जाती है कि वह कठोर परिश्रम कर व्यावसायिक सफलता प्राप्त करे। इससे ही ईश्वर प्रसन्न होता है, स्वर्ग और मुक्ति मिलती है न कि केवल गिरजाघर में जाने से। इस प्रोटेस्टैण्ट आचार ने भी पूंजीवाद के विकास में सहायता दी क्योंकि परिश्रम, उत्साह और व्यावसायिक सफलता पूंजीवाद के लिए आवश्यक है।

(3) **ब्याज वसूलने की छूट**—प्रोटेस्टैण्ट धर्म में धन से धन कमाने को अच्छा माना गया है अर्थात् एक व्यक्ति ब्याज पर पैसा देकर भी पैसा कमा सकता है। इसके विपरीत कैथोलिक धर्म एवं इस्लाम में ब्याज लेना बुरा माना गया है। इस प्रकार से ब्याज पर पैसा देकर धन कमाने की स्वीकृति ने भी पूंजीवाद को बढ़ावा दिया।

(4) **शराबखोरी पर रोक एवं ईमानदारी को बढ़ावा**—प्रोटेस्टैण्ट धर्म में शराब पीने व शराव पीकर काम पर जाने को अनुचित एवं ईमानदारी से कार्य करने को उचित माना गया है। शराब पीकर मशीन पर काम करने से जान का खतरा है। इस प्रकार शराबखोरी रोकने पर भी पूंजीवादी व्यवस्था को बढ़ावा मिला।

(5) **अवकाश पर रोक**—प्रोटेस्टैण्ट धर्म में अकारण अधिक समय तक अपने काम में छुट्टी लेने को भी अनुचित माना गया है। पूंजीवाद की सफलता के लिए अधिक कार्य करना एवं कम छुट्टी लेना आवश्यक है।

वेबर ने प्रोटेस्टैण्ट धर्म के उपर्युक्त आचारों को ही पूंजीवाद के विकास के लिए एकमात्र कारक नहीं माना है वरन् अन्य कारकों को भी महत्व दिया है इस नाते वे बहुकारकवादी कहे जा सकते हैं।

वेबर ने अपनी बात की पुष्टि करने के लिए यूरोप के विभिन्न देशों से ऐतिहासिक प्रमाण जुटाये। इटली व स्पेन में जहां पर कैथोलिक धर्म के अनुयायी अधिक हैं पूंजीवाद का विकास इंगलैण्ड, अमरीका व हॉलैण्ड की अपेक्षा कम हुआ। इंगलैण्ड, अमरीका व हॉलैण्ड में प्रोटेस्टैण्ट धर्म के अनुयायी अधिक हैं। वेबर ने गैर पश्चिमी देशों में प्रचलित धर्मों जैसे कन्फ्यूशियस, बौद्ध, हिन्दू, इस्लाम और यहूदी धर्मों का अध्ययन किया और कहा कि इन धर्मों के आर्थिक विचारों में वे तत्व नहीं हैं जो आधुनिक पूंजीवाद को जन्म दे पाते। उदाहरण के लिए, इस्लाम में ब्याज लेना अनुचित माना गया है। हिन्दू धर्म भौतिकवाद के स्थान पर आध्यात्मवाद पर अधिक जोर देता है। कर्मवाद के सिद्धान्त के आधार पर पिछले जन्म के कर्म के आधार पर ही इस जन्म में फल मिलता है। इसी प्रकार से जाति के कठोर नियम व्यक्ति को अपनी जाति के व्यवसाय को त्यागने की इजाजत नहीं देते और प्रत्येक जाति के लिए एक व्यवसाय भी निश्चित है। हिन्दू धर्म एक ऐसी समाज-व्यवस्था को जन्म देता है जिसमें सामाजिक गतिशीलता सम्भव नहीं है। इस प्रकार से वेबर प्रोटेस्टैण्ट आचार और आधुनिक पूंजीवाद के विकास को कार्य-कारण के आधार पर स्पष्ट करने का प्रयत्न किया और प्रोटेस्टैण्ट आचारों को पूंजीवाद के विकास के लिए एक प्रभावशाली कारक माना। यद्यपि अन्य कारक भी इसके विकास के लिए उत्तरदायी रहे हैं।

पूंजीवाद एवं प्रोटेस्टैण्ट नीति का सम्बन्ध (Relationship of Capitalism and Protestant Ethics)

'पूंजीवाद के सार' तथा 'प्रोटेस्टैण्ट नीतियों' के अध्ययन से वेबर को इनके आधारों में कई असमानताएं ज्ञात हुईं और इसी आधार पर उसने कारण और परिणाम की व्याख्या की। उसने प्रोटेस्टैण्ट नीति को कारण और पूंजीवाद को परिणाम माना। वेबर ने सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी में धर्म संघों तथा उनकी मान्यताओं में होने वाले परिवर्तनों का मानव व्यवहार पर क्या प्रभाव पड़ा, का अध्ययन किया। प्रारम्भ में तो कई धर्म संघों ने धन और भौतिक वस्तुओं के संग्रह को उचित माना, किन्तु बाद में इसे अधार्मिकता की श्रेणी में रखा गया और वैराग्य को उचित ठहराया गया। वैराग्य की इस धारणा ने आधुनिक पूंजीवादी अर्थ-व्यवस्था को भी

प्रभावित किया। वेबर ने ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर यह स्पष्ट करने का प्रयत्न किया कि यूरोप में कई देशों में पूंजीवाद के आरम्भ और विकास के लिए प्रोटेस्टैण्ट की नीतियां सहायक रही हैं। प्रोटेस्टैण्ट धर्म की नैतिक शिक्षाएं धीरे-धीरे इनके सभी अनुयायियों के जीवन में ढल गयीं और वे परिश्रम से आजीविका कमाने को उचित मानने लगे और इस धारणा ने पूंजीवाद के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

संसार के महान् धर्मों का अध्ययन (Study of the Great Religions of the World)

धर्म और आर्थिक संरचना के पारस्परिक सम्बन्धों को ज्ञात करने के लिए वेबर ने विश्व के छः महान् धर्मों—कन्फ्यूशियस, हिन्दू, यहूदी, ईसाई, बौद्ध और इस्लाम धर्मों का अध्ययन किया। उसने इन धर्मों के प्रमुख सिद्धान्तों तथा उनसे प्रभावित आर्थिक नीतियों की व्याख्या की। हम उसके द्वारा किये गये कन्फ्यूशियस, हिन्दू तथा यहूदी धर्म सम्बन्धी अध्ययनों में धर्म और आर्थिक संरचना के सह-सम्बन्धों का संक्षेप में यहां उल्लेख करेंगे। वेबर ने अपनी पुस्तक 'चीन का धर्म' (*The Religion of China*) में कन्फ्यूशियस और ताओवाद का विस्तार से उल्लेख किया है। इसके एक भाग में वेबर ने यह स्पष्ट किया है कि कन्फ्यूशियस तथा प्रोटेस्टैण्ट धर्म की नीतियों में भिन्नता होने के कारण ही चीन एवं पश्चिमी समाजों में प्रचलित आर्थिक मनोवृत्तियों में भिन्नता पायी जाती है। कन्फ्यूशियस धर्म में ईश्वर की नैतिक आवश्यकता तथा मानवीय निर्बलता, पाप की चेतना तथा मुक्ति की आवश्यकता, लौकिक जीवन के आचरण तथा पारलौकिक जीवन में मिलने वाले पारितोषिक, धार्मिक कर्तव्य तथा सामाजिक राजनीतिक वास्तविकता, आदि के बीच किसी प्रकार का तनाव नहीं मिलता। यह धर्म अपने अनुयायियों को संसार के वर्तमान रूप से अनुकूलन करने पर ही बल देता है न कि किन्हीं विशेष आदर्शों के अनुरूप अपने को परिवर्तित करने पर। यह धर्म पारिवारिक सम्बन्धों की परम्परागत शैली को बनाये रखने पर भी बल देता है। इस प्रकार यह धर्म के लोगों को परम्परा और परिपाटी से बंधे रहने पर जोर देता है न कि उनसे मुक्त होने पर। इस धर्म ने चीन की परम्परागत राजनीतिक व्यवस्था, जिसमें कि सम्राट को देवता-तुल्य माना गया था, को बनाये रखने पर जोर दिया। इसके विपरीत पश्चिमी समाजों में पारिवारिक सम्बन्धों को अधिक महत्व नहीं दिया गया और वहां पारिवारिक कर्तव्यों की तुलना में नैतिक सिद्धान्तों के पालन पर अधिक बल दिया गया। आर्थिक दृष्टि से इसका यह अर्थ है कि किसी व्यक्ति की व्यापारिक साख उसकी नैतिक विशेषताओं पर निर्भर है। कन्फ्यूशियस धर्म की आर्थिक और राजनीतिक शिक्षाओं में जन-कल्याण की बात को तो बढ़ा-चढ़ाकर बताया गया है, किन्तु उसमें ऐसी कोई उचित आर्थिक मनोवृत्ति नहीं है जो इन धार्मिक नीतियों के उद्देश्य को पूरा कर सके। इसके विपरीत प्रोटेस्टैण्ट धर्म में श्रम और कर्म की नीतियां जिन्होंने पूंजी के संचय और तार्किक विचारों को बढ़ावा दिया, पूंजीवाद के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

वेबर ने दूसरा उदाहरण हिन्दू धर्म का दिया। 'भारत का धर्म' (*The Religion of India*) नामक पुस्तक जो कि उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुई, में वेबर ने हिन्दू धर्म की उन बातों का उल्लेख किया है जिनके कारण भारत में नवीन अर्थव्यवस्था (पूंजीवाद) का विकास नहीं हो सका। वेबर का मत है कि हिन्दू धर्म वास्तव में एक ब्राह्मण धर्म है जिसकी स्थापना और विकास उन ब्राह्मण राजपुरोहितों, धर्मशास्त्रज्ञों तथा विधिवेत्ताओं द्वारा किया गया जो कूटनीति और चमत्कारी कर्मकाण्डों के ज्ञान में प्रवीण थे। वेबर के अनुसार हिन्दू धर्म में दो सिद्धान्त प्रमुख हैं—एक पुनर्जन्म का दूसरा कर्म का। इन सिद्धान्तों में यह कहा गया है कि मनुष्य के कर्मों का प्रभाव उसके अगले जन्म के भाग्य पर पड़ता है तथा प्रत्येक हिन्दू का सामाजिक पद जाति व्यवस्था में बंधा हुआ है। इन विचारों के सहारे ब्राह्मणों ने यह बताया कि एक व्यक्ति की मुक्ति उसकी जाति द्वारा निर्धारित कर्मों को पूरा करने से ही सम्भव है। धार्मिक नीतियों से यह भी स्पष्ट है कि केवल ब्राह्मण ही मोक्ष का अधिकारी है क्योंकि मोक्ष पाने के लिए जितने पुण्य चाहिए, उन्हें अन्य व्यक्ति अर्जित नहीं कर सकते। हिन्दू धर्म की न्याय व्यवस्था भी ब्राह्मणों के पक्ष में है जो ब्राह्मणों पर अत्याचार को निषेध करती है तथा ब्राह्मणों के विरुद्ध न्याय को भी अस्वीकार करती है। ब्राह्मण समाज में पाप-मोचक और सलाहकार माने जाते रहे हैं और उन्होंने ही भारतीय जाति व्यवस्था को विकसित किया तथा उसे प्रभावपूर्ण बनाया।

दुनिया में कहीं भी भारत की तरह धार्मिक पुरोहितों को उच्च सम्मान नहीं मिला तथा उनके उच्च सम्मान की पुष्टि के लिए भ्रान्त तर्क एवं प्रमाण विकसित नहीं किये गये। हिन्दू धर्म की नीतियों का उद्देश्य इन्द्रियों और आवेगों के संसार से दूर भगाना, जीवन की दौड़धूप से व्यक्ति को मुक्ति दिलाना और ईश्वर से

एकाकार करना है। ब्राह्मण सिद्धान्तों ने संसार के दुःख पाप और अपूर्णता से ही दूर भागने की बात नहीं कही वरन् इस क्षणभंगुर संसार को त्यागने की बात भी कही है। सांसारिक वस्तुओं की आसक्ति और जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा पा लेना ही वास्तविक मुक्ति है। हिन्दू धर्म लौकिक समस्याओं के उदासीन रहने तथा तपस्या और कर्मकाण्ड करने पर जोर देता है साथ ही यह अपनी-अपनी जाति के अनुसार कर्म करने की बात कहता है। इस प्रकार हिन्दू धर्म जाति-भेद को भी बढ़ावा देता है। इन सभी विशेषताओं के कारण हिन्दू एक ऐसी जीवन शैली में फंस गया जिसे लांघकर वह तार्किक संसार में प्रवेश नहीं कर सका। हिन्दू धर्म की इन नीतियों से आबद्ध जाति व्यवस्था में भारत के आर्थिक विकास को रोका और जातीय बाधाओं के कम होने पर ही आर्थिक क्रियाओं में तार्किकता की वृद्धि हुई। इस प्रकार वेबर यह मानते हैं कि हिन्दू धर्म की नीतियां भारत के आर्थिक और भौतिक विकास में बाधक रही हैं।

'प्राचीन यहूदी धर्म' नामक पुस्तक वेबर की मृत्यु के बाद प्रकाशित हुई। इस रचना में वेबर ने उन परिस्थितियों का उल्लेख किया है जो पश्चिमी समाजों के धर्म में तार्किकता के विकास के लिए उत्तरदायी रही हैं। यहूदी धर्म में उस सक्रिय वैराग्य के दर्शन होते हैं जिसमें ईश्वरीय निर्देशों के अनुसार नीति सम्बन्धी कार्यों पर विचार किया गया। ईसाई धर्म का मठवाद सभी सांसारिक वस्तुओं को त्यागने के पक्ष में था, किन्तु यहूदी धर्म ने प्रोटेस्टैण्ट धर्म में एक ऐसी नैतिकता को विकसित किया जो संसार के स्वरूप में परिवर्तन लाना चाहती थी, यद्यपि प्रोटेस्टेण्ट धर्म भी वैराग्य में विश्वास करता है, किन्तु यहूदी धर्म के समान यह संसार को इस अर्थ में त्यागता है कि मौज उड़ाना और आराम करना ऐसे प्रलोभन हैं जो मुक्ति के प्रयत्न में बाधक हैं। यहूदी पैगम्बर संसार को शाश्वत न मानकर इसे उत्पन्न किया गया मानते हैं, इसका अर्थ हुआ कि संसार एक ऐतिहासिक घटना है जिसे ईश्वर द्वारा एक निर्दिष्ट व्यवस्था की स्थापना के लिए बनाया गया है। इस आधार पर यहूदियों का विश्वास है कि भविष्य में ईश्वर के द्वारा निर्दिष्ट सामाजिक व राजनीतिक क्रान्ति होगी और उसी के अनुरूप व्यक्तियों की मनोवृत्तियों का निर्धारण होना चाहिए, इन विश्वासों के कारण ही यहूदियों में आचरण की एक उच्च तर्कनापरक धार्मिक नीतिक विकसित हुई। वेबर का कथन है कि यह नीति आज भी बहुत बड़ी सीमा तक मध्य-पूर्वीय तथा यूरोपीय आचार का एक महत्वपूर्ण आधार है। उदाहरण के लिए, यहवा (यहूदियों का उपास्य) ने नम्रता तथा आज्ञा पालन को मनुष्य का परमुख गुण बताया तथा यह स्पष्ट किया कि अच्छे व बुरे भाग्य की आशाएं और पुण्य करने की आवश्यकता निकट भविष्य से ही सम्बद्ध है। इस प्रकार यहूदी धर्म परम्परागत तन्त्र तथा रहस्यमयी कल्पनाओं में स्वतन्त्र है और एक ऐसे धर्म को महत्व देता है जो मनुष्य के दैनिक जीवन को ईश्वर द्वारा बताये गये नैतिक नियमों से जोड़ देता है। इस प्रकार वेबर का विश्वास है कि यहूदी धर्म ने नैतिक तर्कनावाद के निर्माण में सहायता देकर उन मनोवृत्तियों का विकास किया जो पूंजीवाद के सार के अनुरूप हैं।

वेबर के उपर्युक्त विचारों से स्पष्ट है कि उनकी रुचि धार्मिक नीतियों के आर्थिक क्रियाओं पर पड़ने वाले प्रभावों को ज्ञात करने में थी। उन्होंने धार्मिक नीतियों और आर्थिक क्रियाओं के पारस्परिक सम्बन्धों को ही स्पष्ट नहीं किया वरन् उन्होंने धार्मिक विचारों के सामाजिक संस्तरण पर पड़ने वाले प्रभावों को भी ज्ञात किया। उन्होंने यह बताया कि विभिन्न धर्मों के पैगम्बरों, प्रचारकों और विद्वानों, आदि की एक विशेष जीवन-शैली थी और उन्होंने अपनी धार्मिक नीतियों का प्रचार करके सामाजिक संस्तरण तथा आर्थिक क्रियाओं को एक विशेष रूप देने का प्रयत्न किया। **पारसन्स** का कथन है कि धर्म के समाजशास्त्र की व्याख्या में वेबर का महत्वपूर्ण योगदान एक व्यवस्थित पद्धतिशास्त्रीय अन्तर्दृष्टि है जिसके द्वारा उन्होंने विभिन्न कारकों को एक-दूसरे से पृथक् करके उनके कारण और प्रभावों को एक-दूसरे की तुलना में स्पष्ट किया।

प्रश्न

1. 'पूंजीवाद का सार' पर टिप्पणी लिखिए।
2. प्रोटेस्टैण्ट नीति (आचार) पर लेख लिखिए।
3. पूंजीवाद एवं प्रोटेस्टैण्ट आचार का सम्बन्ध बताइए।
4. संसार के महान धर्मों के अध्ययन पर वेबर के विचार स्पष्ट कीजिए।
5. वेबर के विभिन्न धर्मों सम्बन्धी अध्ययन के आधार पर बताइए कि धर्म और आर्थिक संरचना के बीच क्या सम्बन्ध पाया जाता है।